कोई भी उससे अधिक बेवकूफ और अजीब नही हो सकता जो भगवान की उपस्थिति को अस्वीकार करता है। भले ही वह एक महान वैज्ञानिक क्यूं न हो। वो तो ये भी नही सही सही बता पा रहा है कि "मै कौन हूँ?" इस बात को हमने विस्तार पूर्वक समझा है कि "मै कौन हूँ?" ये प्रश्न तब तक हल नही हो सकता जब तक जीव खुद को आत्मा नही मानता।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

हमारे पास जो कुछ भी है उसके लिए हमे भगवान के प्रति आभारी रहना चाहिए और जो हमारे पास नहीं है उसके लिए भी हमे भगवान के प्रति आभारी रहना चाहिए। इस तथ्य को स्वीकार करें कि भगवान हमारे लिए सब कुछ है।

अभी तक हम अपने और अपने प्रियजनों लिए काम किया है। भगवान को या भगवान के जनों को अपना मानते ही नही है और अपना नहीं मानते इसलिए उनके लिए कुछ करने की बात आती है तो हजार बहाने बनाते है। हमारे पास जो है वो सब उसी भगवान का दिया हुआ है। लेकिन भगवान को हम कुछ भी वापस नहीं देते। यह बदलना चाहिए। हमे भगवान के लिए काम करना चाहिए, न कि परिवार और दोस्तों के लिए। यह कोई तरीका नहीं है कि अपने उपकार कर्ता को भूल जाए। परिवार की ओर कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, न कि प्यार।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जब कोई छात्र अध्ययन के लिए अपना घर छोड़ देता है तो हॉस्टल में रहता है जहां हॉस्टल वार्डन छात्र की खाना आदि सभी जरूरतों का ख्याल रखाता है। इस कारण यदि छात्र हॉस्टल वार्डन को अपना पिता मानने लगे तो

वो छात्र मूर्ख एवं कृतघ्नी है। क्योंकि उसके ठहरने के लिए, खाना आदि के लिए उसके माता-पिता द्वारा भुगतान किया जाता है। हॉस्टल वार्डन छात्र का पिता नहीं है।

इसी तरह, भगवान जो जीव का पिता हैं, जीव की कुछ परिवारों के साथ इस धरती पर रहने की व्यवस्था करता हैं ताकि उसकी जरूरतों का ध्यान रखा जा सके। जीव के कर्मों के अनुसार उसके लिए शरीर, धन, संपत्ती आदि का प्रबंध कर देता है जो उसे परिवार से मिलता है। परिवार वाले तो अपने सुख के लिए जीते है। वे भगवान द्वारा दिया गया उसके भाग्य का ही उसको देते है।यह जीव के पिता के रूप में भगवान की स्थिति को नहीं बदलता है। जीव का सच्चा घर भगवान का निवास है। जीव को अवगत होना चाहिए कि एकमात्र शुभचिंतक, सुविधाकर्ता और आत्मा का प्रदाता ईश्वर है और इसलिए आत्मा को कम से कम ईश्वर को प्रति कृतज्ञता दिखानी चाहिए।